## अध्याय –चतुर्थ

# सेवा निवृत्त तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण उसका प्रायः सम्पूर्ण जीवन समाज में ही व्यतीत होता है । समाज से ही व्यक्ति की विचार, भावनाएँ, निश्चित होती है, एवं उसके व्यवहार, मनोवृत्ति सामाजिक स्थिति से प्रभावित होती है । बच्चा जब जन्म लेता है, तो वह सिर्फ एक जैवकीय प्राणी होता है, उसमे कोई भी सामाजिक गुण नही होती. परिवार से ये सामाजिक गुण विकसित होती है। समाज व्यक्ति को प्रचलित आचार –विचार, रीति रिवाज, आदत एवं विश्वासों के अनुसार ढालती है । इसी परिवार से ही स्नेह त्याग, सहानुभूति, कर्त्तव्य पालन, अनुशासन का पाठ सीखता है ।

प्रमुख समाजशास्त्रियों जैसे दुर्खीम(1912)[1], सोरोकिन (1926)[2], एण्डरसन (1961)[3], श्रीनिवास (1966)[4], ने अपने अध्ययनों में इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, सामाजिक गतिशीलता, नए विचारधारा, विकास परिवर्तन, और मानवीय व्यवहार को महत्वपूर्ण तरीके से प्रभावित करता है।

बिरस्टीड(1957)[5], ने द सोसियल आर्डर में लिखा है कि संस्कृति एक व्यवस्था है, जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों, बहुत से भौतिक एवं अभौतिक प्रतीकों, परंपराओं, विचारों, सामजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं को सम्मिलित करते हैं। डेविस(1948)[6], ने अपने अध्ययन ह्यूमन सोसायटी में लिखा है कि जैवकीय विशेषताओं के कारण ही व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक गुणों से अनुकूलन करने की क्षमता प्राप्त करता है।

बोगार्डस(1926)[7], ने सोसियोलॉजी में स्पष्ट किया है कि सामाजीकरण इकट्ठा मिलकर कार्य करने, समूह दायित्व की भावना विकसित होने तथा अन्य व्यक्तियों की कल्याणकारी आवश्यकताओं से मार्गदर्शन लेने की प्रक्रिया है।

ग्रीन(1956)[8], ने अपने अध्ययन में शिशु के समाजीकरण पर लिखा है कि ''समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक सांस्कृतिक विशेषताओं एवं व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।

अतः हम कह सकते हैं कि समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक सांस्कृतिक विशेषताओं, आत्मपन, एवं व्यक्तित्व को प्राप्त करता है। इस प्रकार शिशु के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

यंग(1956)[9], ने अपने अध्ययन में सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर बल देते हुए लिखा है कि समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों से परिचित कराने, उससे समाज तथा उसके विभिन्न समूहों में एक सहभागी सदस्य बनने तथा उस समाज के आदर्श नियमों एवं मूल्यों को स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान करने वाली प्रक्रिया है।

अतः व्यक्ति, समाज और मूल्य को अलग–अलग रखकर नही समझा जा सकता. जैसे कि राधाकमल मुखर्जी ने अपनी पुस्तक ''social structure of values '' मे लिखा है– '' मनुष्य, समाज तथा मूल्य को पृथक–पृथक रखकर नहीं समझा जा सकता है, इन तीनो के मध्य एक अन्तर संबंध है ।[(10)]

हमारे देश में बुजुर्गो के दो वर्ग देखने को मिलते है – पहला जो आत्मनिर्भर है, एवं दूसरा वर्ग जो अपनो पर या परिवार पर निर्भर है। इस कारण ये वर्ग समाज के लिये कम महत्वपूर्ण हैं। यदि हम मानव संसाधन के क्षमता एवं सभावनाओं पर केन्द्रित हो जायें, तो हमे पहले वर्ग के वरिष्ठ नागरिक एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी कड़ी के रूप में समाज द्वारा सार्थक उपयोग हो सकता है। एक आँकड़े

के मुताबिक इस दशक के अंत तक इनकी संख्या 14 करोड़ से अधिक की हो जायेगी । सेवा निवृत्ति के बाद इन वरिष्ठ नागरिको का संबंध – पारिवारिक व्यवस्था से कुछ दूरियाँ उत्पन्न करता है, क्योंकि ये बुजुर्ग शारीरिक एवं मानसिक रूप से कुछ सीमा तक निष्क्रिय हो जाते है ।

जी. स्वामीनाथन, जो योजना आयोग के माननीय सदस्य थे, ने अपने आर्टिकल में लिखा है कि हमारे देश में कामकाजी निजी वर्ग का एक बहुत बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र से जुड़ा है। ये असंगठित क्षेत्र जैसे – निजी चिकित्सक, चार्टर्ड– एकाउन्टेन्ट, कृषि, लघुउघोग, हस्तकला, परिवहन आदि आजीवन चलने वाले व्यावसाय अधिक उम्र तक चलते है । इनमें सेवा निवृत्ति बहुत समय बाद होती है, किन्तु संगठित क्षेत्रो मे कार्यक्षमता के बावजूद एक निश्चित आयु मे सेवा निवृत्त होना पड़ता हैं। सेवा निवृत्ति के पश्चात् ये वरिष्ठ नागरिक अपने सम्मान में कमी महसूस करते हैं साथ ही यदि ये कामकाजी या सक्रिय नही है, तो शेष समय अपने घर गृहस्थी से संबंधित कार्य एवं बच्चे की देखरेख में व्यतीत करते हैं ।व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण –उसकी पारिवारिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का मुख्य आधार है । इसी के माध्यम से उसके दृष्टिकोणो, मनोवृत्तियों एवं विचारो को सही ढंग से समझा जा सकता है ।

समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई – परिवार है, यही परिवार उन व्यक्तियो का समूह है, जो विवाह एवं रक्त संबंधो से जुड़े होते हैं ये एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं। जो पति –पत्नी, माता –पिता, पुत्र –पुत्री, भाई–बहन के रूप में अपनी भूमिका निभाते हुए एवं अंतःक्रिया एवं अंतःसंचार कर एक गृहस्थी का निर्माण करते है।''[11] प्रस्तुत अध्याय में सेवानिवृत्त तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी उत्तरदाता हैं। इन उत्तरदाता की आयु जाति, धर्म, आय, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति आदि से संबंधित तथ्यो को संकलित करके उत्तरदाताओ की सामाजिक पृष्ठभूमि के संबंध मे जानकारी प्राप्त की गई हैं। सेवा निवृत्ति के बाद इन वरिष्ठ नागरिको का संबंध – पारिवारिक

व्यवस्था से कुछ दूरियाँ उत्पन्न करता है, क्योंकि ये बुजुर्ग शारीरिक एवं मानसिक रूप से कुछ सीमा तक निष्क्रिय हो जाते है ।

मेकाइवर तथा पेज के अनुसार– ''परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंधों द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन–पालन की व्यवस्था करता है।''[12] रिवर्स (1950)[13], परिवार शब्द से हमारा आशय एक छोटे से सामाजिक समूह से होता है, जिसमें माता–पिता तथा बच्चे सम्मिलित हो। समाज की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था हैं। परिवार समाज की प्रारंभिक इकाई है, जिसकी सामाजिक संरचना में केंन्द्रिय स्थिति होती है। मानव जीवन के प्रांरभ से ही परिवार उसके साथ रहा है। प्रत्येक मानव जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त परिवार  का सदस्य रहता है। संपूर्ण समाज का विस्तार करने में परिवार का विशिष्ट योगदान रहा है। परिवार की व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं व्यकित्व विकास का प्रमुख माध्यम है। साथ ही यह एक सार्वभौमिक संस्था है, जो सभी समाजों में किसी न किसी रूप में पायी जाती है इतना ही नहीं बल्कि यह मानव व्यवहार को नियंत्रित करने तथा उसे एक जैविकीय प्राणी बनाने से सामाजिक प्राणी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। व्यक्ति परिवार से ही सामाजिक व्यवहार सीखता है।

बर्जेश, लॉक, तथा थॉमस (1971)[14], ने लिखा है कि परिवार में ही सामाजिक अपेक्षाओं का परिचय बालक को कराया जाता है, उसकी आदतों का निर्माण होता है, व्यवहार निश्चित होता है एवं उसके कार्यों को परिभाषित किया जाता है।

आधुनिक युग में संचार के विभिन्न साधनों तथा शिक्षा के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के कारण सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं के प्रति व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील हो गया है, जिसके फलस्वरूप असंतुष्ट व्यक्तियों के व्यवहार के प्रति समाज में अत्यधिक जागरूकता उत्पन्न हुई है, और व्यक्तियो द्वारा यह महसूस किया

जाने लगा है कि विभिन्न संसाधनों द्वारा सामाजिक समस्याओं के निराकरण पैसे खर्च किया जाना चाहिए, और यह तभी संभव हो सकता है जब इस समस्याओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विस्तृत अध्ययन एवं विवेचन करके इनके कार्य कारण संबंधों को ज्ञात कर दूर करने का उपाय किया जा सके।

परिवार में व्यक्ति को प्रायः सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त होती है। सेवानिवृत्ति के पश्चात् परिवार की अहमियत और अधिक हो जाती है सामान्यतः प्रत्येक सेवानिवृत्त कर्मचारी, परिवार से हर संभव मदद की अपेक्षा रखता है। लेकिन संयुक्त परिवार का विघटन, एकाकी परिवार की प्रथा एवं पति–पत्नी दोनो का नौकरी करना तथा कई प्रकार की आर्थिक समस्याओं के कारण इन सेवा निवृत्तों की समस्या में वृध्दि हुई है। अतः यह एक सामाजिक समस्या के रूप में सामने आ रहा है। वृध्दों की इस दयनीय स्थिति के कारण ही संभवतः वर्ष 1999 को अन्तर्राष्ट्रीय वृध्द वर्ष घोषित किया गया है। परिवार में व्यक्ति अपने को सबसे सुरक्षित महसूस करता है। लेकिन संयुक्त परिवार का विघटन एवं एकाकी परिवार में वृध्दि के कारण परिवार में समायोजन एक महत्वपूर्ण समस्या है। आधुनिकीकरण एवं महत्वाकांक्षा संयुक्त परिवार के विघटन के दो महत्वपूर्ण कारक है।

भारतीय परिवार में प्रायः पुरानी परम्पराओं को अधिक महत्व दिया जाता है, जिसमें बुजुर्गों की देखभाल तथा सम्मान को अधिक प्राथमिकता दी गई। पुराने संयुक्त परिवार में घर के बुजुर्ग व्यक्ति जीवन पर्यन्त मुखिया होते थे। महत्वपूर्ण कार्यों मे उनसे सलाह मशविरा ली जाती थी, लेकिन आज एकाकी परिवार के कारण पति–पत्नी एवं बच्चों के सिवाय, बुजुर्ग व्यक्ति की गिनती अतिरिक्त सदस्य के रूप में होने के कारण उनकी स्थिति क्रमशः दयनीय होते जा रही है। परिवार में वर–वधु के चयन में इन बुजुर्गो का स्थान महत्वपूर्ण था। लेकिन इनके चयन में सेवा निवृत्त व्यक्यिों के अधिकार में कमी आ आई है एवं बच्चे इन बुजुर्गो के स्थान पर स्वयं अपने जीवन साथी का चयन करने लगे है। भलें ही यह स्थिति शत–प्रतिशत नहीं है।

बुजुर्गों का सम्मान कम होने के परिणाम स्वरूप इनमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रति आकर्षण अधिक देखने को मिलता है।

प्रस्तुत अध्याय में सेवानिवृत्त तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी उत्तरदाता हैं। इन उत्तरदाता की आयु जाति, धर्म, आय, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति आदि से संबंधित तथ्यो को संकलित करके उत्तरदाताओकी सामाजिक पृष्ठभूमि के संबंध मे जानकारी प्राप्त की गई हैं।

## उत्तरदाताओं का लिंगः–

सामाजिक–विभेदीकरण के आधार के रूप में मानव समाज में लिंग का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह विभेदीकरण मानव समाज में हमेशा विद्यमान रहा है। वर्तमान समय में समाज में प्रस्थिति और भूमिका के निर्धारण में लिंग प्रमुख आधार है। यद्यपि आज मध्यम आर्थिक स्थिति वाली स्त्रियॉ विभिन्न व्यवसायों तथा समाज के अन्य कियाकलापों में सक्रिय रूप से लाभ ले रहे हैं, तथापि स्त्रियों की भागीदारी पुरूषों की अपेक्षा कम दिखायी पड़ती है। मरडॉक(1937)[15], ने अपने अध्ययन में विविध प्रकार के 224 समाजों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि प्रायः तीन–चौथाई समाजों में खाना पकाने, ईधन हेतु लकड़ी लाने, अनाज कूटने, मिट्टी के बर्तन बनाने, कपड़ा बुनने, या चटाई बनाने आदि के काम स्त्रियों के ही सुपुर्द है।

**तालिका कमांक 4.1**

**उत्तरदाताओं का लिंग**

| क्रमांक | उत्तरदाताओं का लिंग | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | पुरूष | 259 | 86.3 |
| 2 | महिला | 41 | 13.7 |
| | योग | 300 | 100 |

इस आँकड़े से स्पष्ट है कि अध्ययनगत उत्तरदाताओं ने अधिकांश उत्तरदाता अर्थात 86.3 प्रतिशत पुरूष एवं 13.7 प्रतिशत उत्तरदाता महिलायें हैं।

## उत्तरदाताओं की आयुः–

व्यक्ति की उम्र के साथ –साथ उसका शारीरिक व मानसिक विकास भी होता है। उम्र मे वृध्दि के साथ –साथ अनुभव मे वृध्दि एवं विचारो में परिपक्वता आती है, किन्तु एक निश्चित उम्र के बाद शारीरिक असमर्थता भी आना स्वाभाविक है। उम्र के साथ –साथ चिन्तन, व्यवहार की क्रियाएँ प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। साथ ही विभिन्न समस्याएँ जैसे–शारीरिक शक्ति एवं स्वास्थ्य का ह्रास, आर्थिक समस्याएँ, पति–पत्नी में से किसी एक की मृत्यु आदि प्रमुख रूप से आती है। इस समय व्यक्ति का ध्यान अपने बीते दिनो की ओर जाता है, एवं वर्तमान जीवन से दुःखी हो जाता है। अतः आयु एक महत्वपूर्ण कारक है। इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने उत्तरदाताओं की आयु समूह को जानने का प्रयास किया जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

### तालिका क्रमांक 4.2

### उत्तरदाताओं की आयु

| क्रमांक | आयु (वर्षो में) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 60–65 | 55 | 18.3 |
| 2 | 65–70 | 89 | 29.7 |
| 3 | 70–75 | 112 | 37.3 |
| 4 | 75–अधिक | 44 | 14.7 |
| | योग | 300 | 100 |

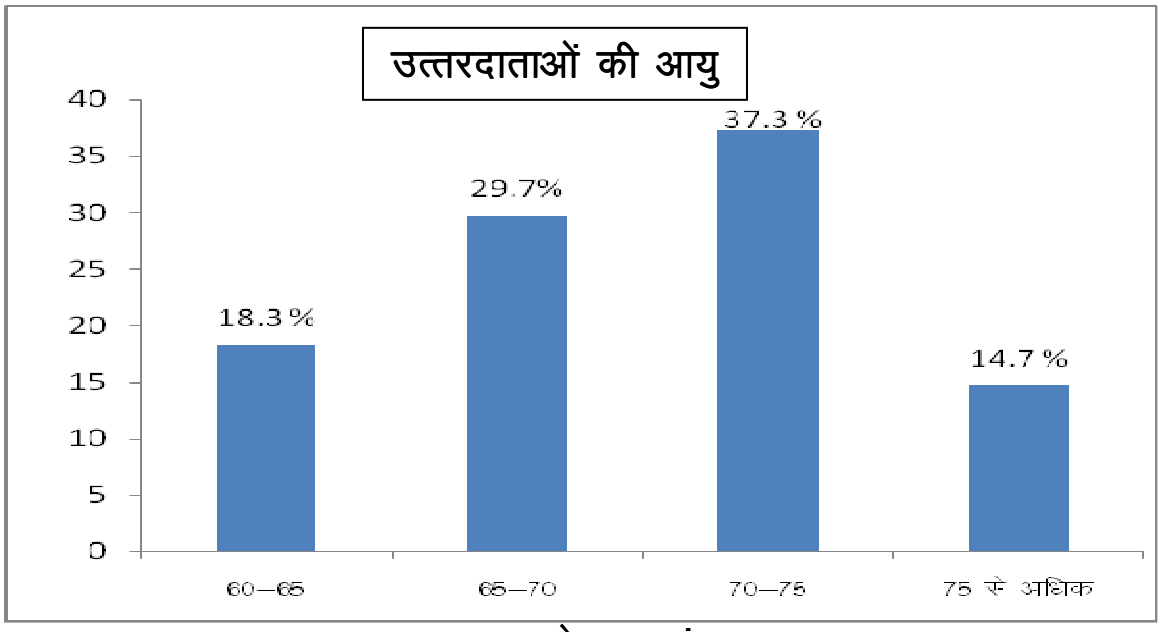


**आरेख क्रमांक 1**

उपरोक्त आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन गत समूह के उत्तरदाताओं की आयु में अधिकांश 37.3 प्रतिशत उत्तरदाता 70 से 75 तथा 29.7 प्रतिशत उत्तरदाता 65 से 70 एवं 18.3 प्रतिशत उत्तरदाता 60 से 65 वर्ष आयु समूह के है। मात्र 14.7 प्रतिशत उत्तरदाता 75 वर्ष से अधिक उम्र के हैं।

*उत्तरदाताओं की जातिः–*

सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रमुख आधार रहा है –समाज मे जाति व्यवस्था । भारतीय समाज व्यवस्था में जाति के आधार पर व्यक्ति को सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती हैं । अतः हमारे समाज की मौलिकता का एक महत्वपूर्ण कारण – जाति व्यवस्था का पालन करना हैं। यही जाति अपने सदस्यों को मानसिक एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती हैं। जाति व्यवस्था भारतीय समाज का प्रमुख आधार स्तम्भ रहा है । इन्द्रदेव के कथन दृष्टव्य हैः–''भारतीय सामाजिक संगठन की सबसे बड़ी विशेषता –जाति व्यवस्था ही है।[(16)] समाज शास्त्र के सैद्धान्तिक अध्ययन मे अधिकांश देशो के समाजशास्त्री विचारक जाति व्यवस्था का वर्णन करते समय भारत का उदाहरण देते है । इसमे संदेह नही कि भारतीय समाज में जाति का जो स्वरूप है वह अत्यंत ही दुर्लभ है । भारतीयजन समुदाय तो लगभग हजार ऐसे समूह मे बँटा

है जिसकी सदस्यता जन्म से निर्धारित है, ये समूह एक–दूसरे के समान ना होकर उँचें या नीचे माने जाते हैं। मजुमदार[17] के अनुसार –एक स्थायी वातावरण या अवस्था के अंतर्गत सामाजिक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने में जाति व्यक्ति की प्रतिरक्षा की प्रमुख व्यवस्था हैं, जो कि परिवर्तनशील क्षमताओ पर आधारित नही हैं। प्रस्तुत अध्ययन में जाति का प्रतिनिधित्व निम्नतालिका से स्पष्ट हैं:–

**तालिका क्रमांक 4.3**
**उत्तरदाताओं की जाति**

| क्रमांक | जाति | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सामान्य | 147 | 49.0 |
| 2 | अनुसूचित जनजाति | 68 | 22.7 |
| 3 | अनुसूचित जाति | 54 | 18.0 |
| 4 | पिछड़ा वर्ग | 31 | 10.3 |
| | **योग** | **300** | **100** |

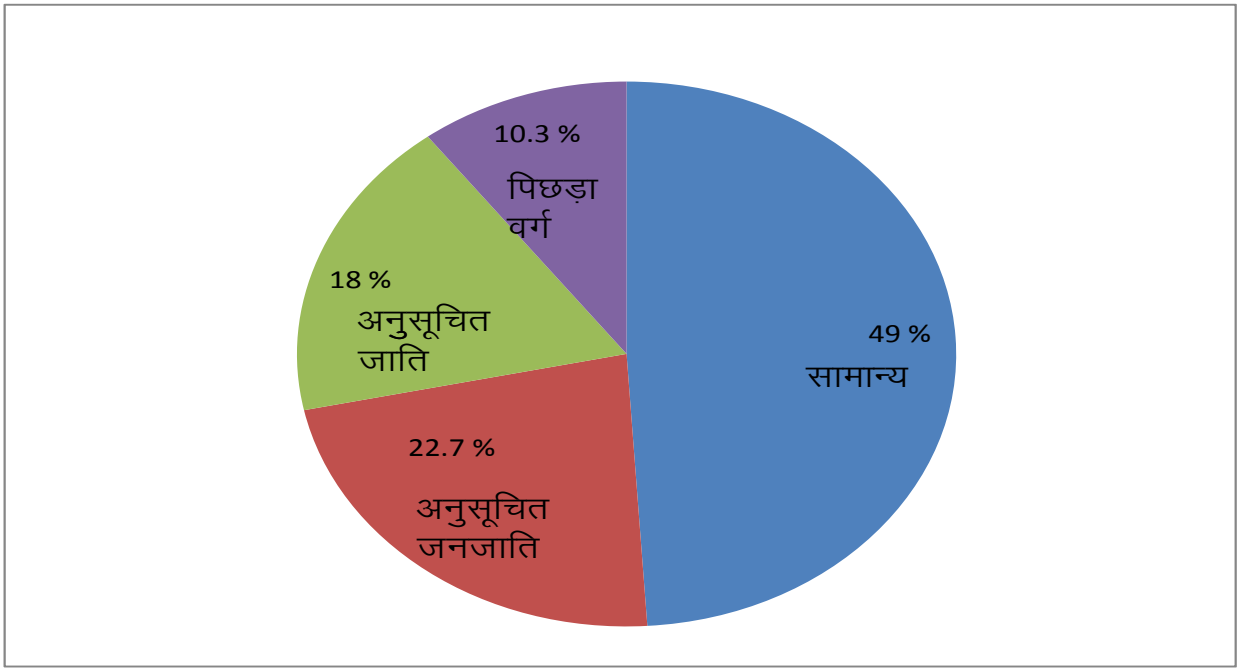


**आरेख क्रमांक 2**

उपरोक्त जातिगत विश्लेषण तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 49.0 प्रतिशत सामान्य वर्ग के, 22.7 प्रतिशत ( बिंझवार, सौंरा, गोंड आदि) अनुसूचित जनजाति के, 18.0 प्रतिशत (चमार, घसिया, नागरची, सतनामी, कोल आदि) हरिजन वर्ग के, 10.3 प्रतिशत ( कोलता, तेली, कलार, कुर्मी, सोनार, आदि) पिछड़े वर्ग के हैं।

## उत्तरदाताओं की मातृभाषा :–

मानव समाज में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव के सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों को भाषा ने ही संभव बनाया है। वर्तमान मानव आज जहां पर है, भाषा के अभाव में मानव सभ्यता के उस शिखर में नहीं पहुँच पाता जहाँ पर आज है। भाषा के कारण मानव धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, विचार, व्यवहार, मान–सम्मान, इत्यादि विकसित हो पाए हैं। यह भाषा ही मानव ज्ञान का संकलन करता है एवं संस्कृति का वाहक भी है।

भाषा में मातृभाषा का अपना अलग महत्व है। शर्मा (1983)[18] अपने अध्ययन में उल्लेख किया है कि मातृभाषा से तात्पर्य माता की भाषा से लिया जाता है। भाषा सीखने का प्रारंभ माता से ही होता है, क्योंकि जन्म के बाद सीधा एवं निकट संबंध शिशु का जितना माता से होता है उतना अन्य से नहीं। अतः शिशु को भाषा का परिचय माता ही करती है और संभवतः यही कारण है कि मातृभाषा शब्द का प्रयोग किया जाता है। शोधार्थी द्वारा अध्ययनगत उत्तरदाताओं से उनके मातृभाषा को जानने का प्रयास किया गया है जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

## तालिका क्रमांक 4.4

## उत्तरदाताओं की मातृभाषा

| क्रमांक | मातृभाषा | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हिन्दी | 41 | 13.7 |
| 2 | छत्तीसगढ़ी | 130 | 43.3 |
| 3 | बंगला | 29 | 9.7 |
| 4 | उड़िया | 36 | 12.0 |
| 5 | मराठी | 28 | 9.3 |
| 6 | तेलगू | 22 | 7.3 |
| 7 | मलयालम | 14 | 4.7 |
| | **योग** | **300** | **100** |

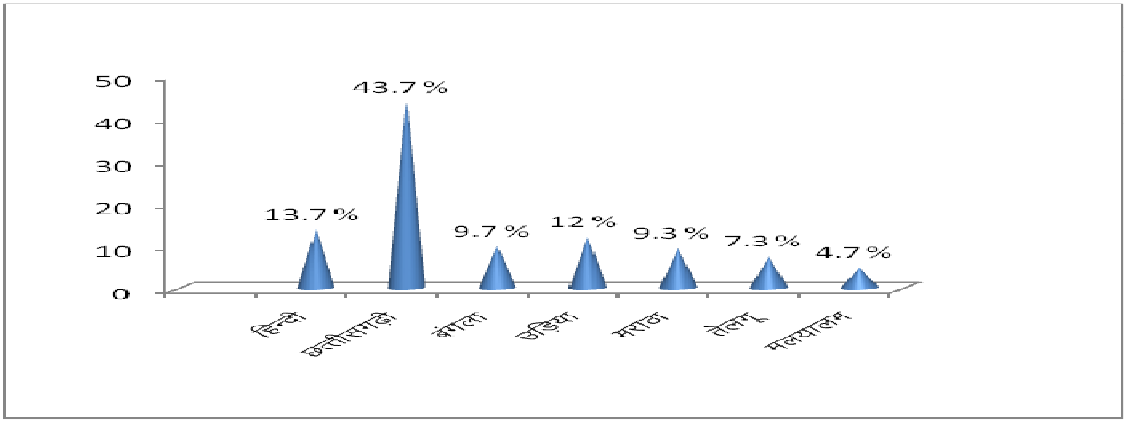


**आरेख क्रमांक 3**

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययनगत् उत्तरदाताओं अधिकांश उत्तरदाताओं की मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है, जिनका प्रतिशत 43.3 है। हिन्दी मातृभाषा उत्तरदाताओं का प्रतिशत 13.7, उड़िया 12.0 प्रतिशत, बंगला 9.7 प्रतिशत, मराठी 9.3 प्रतिशत, तेलगू 7.3 प्रतिशत एवं सबसे कम मलयालम 4.7 प्रतिशत उत्तरदाता हैं।

छत्तीसगढ़ चूँकि मध्यप्रदेश के विभाजन से बना है। अतः ऐसे उत्तरदाता जिनकी मातृभाषा हिन्दी या छत्तीसगढ़ी नहीं है उनसे शोधार्थी द्वारा यह भी जानने का प्रयास किया गया कि हिन्दी प्रदेश में उनकी मातृभाषा हिन्दी क्यों नहीं है ? क्यों

नहीं है ? उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके पिताजी अथवा दादा जी नौकरी को कारण वे अपने राज्य को छोड़कर वे यहाँ बस गये हैं। अतः हमारी भाषा उस प्रान्त की है । वहीं कुछ उत्तरदाताओं ने बताया कि चूँकि हमारी माता अन्य प्रान्त से है अतः हमारी मातृभाषा भी माँ की मातृभाषा की ही हो गई।

## उत्तरदाताओं का धर्मः–

मानव समाज की एक सार्वभौमिक संस्था ''धर्म'' है। किसी भी समाज में धर्म के बिना सामाजिक संगठन को स्थायित्व प्रदान नहीं किया जा सकता। यह एक ऐसी रहस्यमयी अलौकिक शक्ति है, जिसे व्यक्ति अपने कल्याण के लिए प्रयोग में लाता रहा है, एवं प्रकृति की अनिष्टकारी घटनाओं से बचने के लिए मानव समाज सदैव धर्म का सहारा लेता रहा है। आज भी जब मानव चिकित्सा विज्ञान के द्वारा अपने कष्टों को दूर नहीं कर पाता, तो अन्ततः धर्म एवं धार्मिक अनुष्ठानों का ही सहारा लेता है।

''धर्म'' यह एक ऐसी अलौकिक शक्ति है, जो मनुष्य के इहलौकिक एवं परलौकिक जीवन को समुन्नत बनाती है, एवं यह मानवीय शक्ति से सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि होती है। इस अलौकिक शक्ति से संबंधित समस्त क्रियाओं एवं विश्वासों के समष्टि स्वरूप को ही धर्म कहते हैं। ई.बी.टेलर के अनुसार – '' धर्म अलौकिक शक्तियों पर विश्वास है।''[19] 'धर्म'' सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण अनौपचारिक साधन है। मानव जीवन को नियंत्रित करने में धर्म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। हमारे देश में तो आदि काल से धर्म पर अटूट विश्वास किया जाता है यहाँ तक कि मानव जीवन में धर्म का प्रभुत्व जीवन से मृत्यु तक लगातार बना रहता है, एवं प्रत्येक क्रिया कलाप धर्म के निर्देशन एवं नियंत्रण में ही किये जाते हैं। धर्म के संबंध में किंगस्ले डेविस ने कहा है कि– ''धर्म मानव समाज का ऐसा सार्वभौमिक स्थायी एवं शाश्वत तत्व है, जिसे पूर्ण रूप से समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता।''[20]

## तालिका क्रमांक 4.5
## उत्तरदाताओं का धर्म

| क्रमांक | उत्तरदाताओं का धर्म | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हिन्दू | 163 | 54.3 |
| 2 | मुस्लिम | 26 | 8.7 |
| 3 | सिक्ख | 26 | 8.7 |
| 4 | इसाई | 46 | 15.3 |
| 5 | पारसी | 24 | 8.0 |
| 6 | बौद्ध | 15 | 5.0 |
| | **योग** | **300** | **100** |

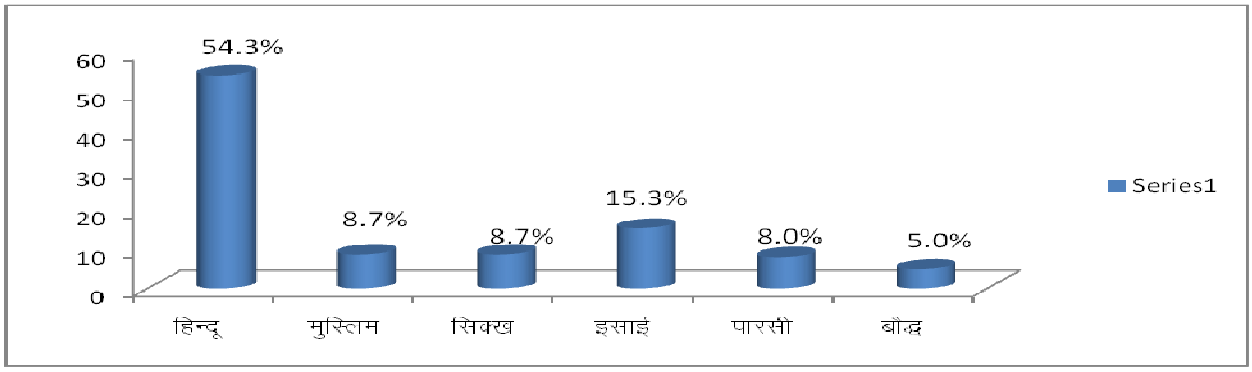


**आरेख क्रमांक 4**

धर्मगत तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि, सर्वाधिक 54.3 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू धर्म को मानने वाले हैं, इसाई धर्म को मानने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 15.3, सिक्ख धर्म को मानने वालों का प्रतिशत 8.7 प्रतिशत, मुस्लिम धर्म को मानने वाले 8.7 प्रतिशत, पारसी धर्म को मानने वाले 8.0 प्रतिशत हैं। मात्र 5.0 प्रतिशत उत्तरदाता बौद्ध धर्म को मानने वाले हैं।

*उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तरः–*

व्यक्ति के चरित्र का विकास शिक्षा के द्वारा होता है, इसी शिक्षा से मस्तिष्क का विकास होता है, और मनुष्य को आत्म निर्भर होने की प्रेरणा मिलती है।

शिक्षा संस्कार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संचरण का सबसे प्रभावशाली माध्यम हैं। उचित अनुचित का ज्ञान भी शिक्षा से ही संभव है। दुर्खीम के अनुसार – "शिक्षा अधिक उम्र के लोगों के द्वारा ऐसे लोगों के प्रति दी जाने वाली क्रिया है, जो अभी तक समाजिक जीवन में प्रवेश करने योग्य नहीं है। इसका उद्देश्य शिशुओं में उन भौतिक, बौद्धिक एवं नैतिक विशेषताओं का विकास करना है, जो उसके संपूर्ण समाज और पर्यावरण से अनुकुलन करने के लिए आवश्यक है।"[21] अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, उत्तरदाताओं ने शिक्षा के माध्यम से ही विभिन्न पदों पर आसीन थे।

## तालिका क्रमांक 4.6

## उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तर

| क्रमांक | शिक्षा का स्तर | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | माध्यमिक | 106 | 35.3 |
| 2 | उच्चतर माध्यमिक | 109 | 36.4 |
| 3 | स्नातक | 31 | 10.3 |
| 4 | स्नातकोत्तर | 54 | 18.0 |
| योग | | 300 | 100 |

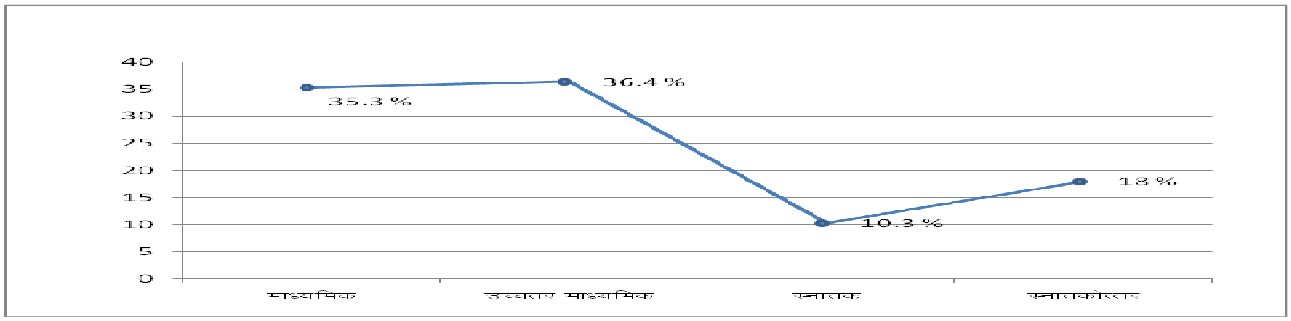


**आरेख क्रमांक 5**

उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तर संबंधी उपरोक्त शैक्षणिक तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 36.4 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चतर माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त किये हैं 35.3 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक स्तर तक, 18.0 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातकोत्तर स्तर तक एवं मात्र 10.4 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त किये हैं।

## उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थितिः–

ब्राउन(1950)[22] , विवाह की वैधानिकता पर बल देते हैं। उनके अनुसार विवाह मात्र लैंगिग संबंध पूर्ति हेतु ही नहीं किया जाता अपितु यह एक सामाजिक व्यवस्था है जिसके द्वारा बच्चों को समाज में वैधानिक स्थिति प्रदान की जाती है एवं सामाजिक रूप से अभिभावकत्व निर्धारित किया जाता है। कपाड़िया(1972)[23], ने अपने अध्ययन में बतलाया कि ''विवाह भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषता की अनिवार्यता है।'' वेस्टर मार्क(1949)[24], ने विवाह को एक संस्था कहा है। उनके अनुसार ''विवाह एक या अधिक पुरूषों का एक से अधिक स्त्रियों के साथ होने वाला वह संबंध है, जिसे प्रथा या कानून स्वीकार करता है और जिसमें विवाह करने वाले व्यक्तियों के और उससे उत्पन्न हुए संभावित बच्चों के एक दूसरे के प्रति होने वाले अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का समावेश होता है।''

विवाह हिन्दूओं का एक संस्कार है। धार्मिक क्रियाओं पर आधारित विवाह एक ऐसी धार्मिक संस्था है जो परिवार में रहने वाले समस्त सदस्यों की देखभाल एवं पालन–पोषण सही तरीके से करती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि विवाह नामक संस्था परिवार की आधार शिला है। विवाह से ही परिवार की सृष्टि होती है जो व्यक्ति को कर्त्तव्य बोध भी कराती है।

मजूमदार और मदान(1961)[25] के अनुसार ''इनमें (विवाह में) कानून या और धार्मिक आयोजन के रूप में उन सामाजिक स्वीकृतियों का समावेश होता है, जो दो भिन्न लिंगों को यौन क्रिया और उससे संबंधित सामाजिक आर्थिक संबंधों में सम्मिलित होने का अधिकार प्रदान करती है।'' मरडॉक(1931)[26] ने लगभग 250 समाजों का अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि विवाह के तीन उद्देश्य होते हैं – 1. यौन संतुष्टि 2. आर्थिक सहयोग 3. संतानों का समाजीकरण एवं पालन पोषण।

जीवन साथी, सुखद जीवन का आधार है। उम्र के इस पड़ाव में जीवन साथी यदि साथ है, तो शेष जीवन हंसी खुशी कट जाता है, लेकिन इनमें से एक भी

(पति या पत्नी) का स्वर्गवास हो गया है, तो जीवन नीरस लगने लगता है। उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि कितने उत्तरदाताओं के जीवन साथी उनके साथ हैं, क्योंकि इस उम्र में वे एक दूसरे के प्रति अधिक अंतर्निर्भर होते है। समाजशास्त्रीयों ने भी जीवन साथी के महत्व को स्वीकारा एवं अध्ययन में पाया कि विधवा की अपेक्षा विधुर अधिक धार्मिक होते हैं एवं वे असुरक्षा की भावना अधिक महसूस करते हैं।

**तालिका कमांक 4.7**

**उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति**

| कमांक | वैवाहिक स्थिति | आवृति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अविवाहित | 6 | 2.0 |
| 2 | विवाहित | 255 | 85 |
| 3 | विधुर | 21 | 7.0 |
| 4 | विधवा | 18 | 6.0 |
| योग | | 300 | 100 |

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 85 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित, 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर, 6.0 प्रतिशत विधवा एवं मात्र 2.0 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं।

**सेवा निवृत्ति पूर्व धारित पद एवं कार्यालय का नामः–**

प्रत्येक शासकीय कर्मचारी अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं कार्यकुशलता के कारण किसी शासकीय सेवा में सेवारत होता है। वरिष्ठता एवं अनुभव से इन्हें पदोन्न्ति भी मिलती है। छत्तीसगढ़ शासन में कई विभाग है। इनमें से प्रायः समस्त विभागों में तृतीय वर्ग कर्मचारी के पद स्वीकृत हैं। इस तृतीय वर्ग सेवा से सेवानिवृत्त धारित पद एवं कार्यालय का नाम जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है :–

## तालिका क्रमांक 4.8

### सेवा निवृत्ति पूर्व धारित पद एवं कार्यालय का नाम

| क्रमांक | धारित पद | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | उच्च श्रेणी शिक्षक | 29 | 9.7 |
| 2 | निम्न श्रेणी शिक्षक | 26 | 8.7 |
| 3 | लेखापाल | 34 | 11.3 |
| 4 | सहायक ग्रेड 1 | 57 | 19.0 |
| 5 | सहायक ग्रेड 2 | 16 | 5.3 |
| 6 | पटवारी | 11 | 3.7 |
| 7 | ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी | 10 | 3.3 |
| 8 | राजस्व निरीक्षक | 8 | 2.7 |
| 9 | वन क्षेत्रपाल | 17 | 5.6 |
| 10 | सिपाही | 17 | 5.7 |
| 11 | खंड विस्तार प्रशिक्षक | 9 | 3.0 |
| 12 | अधीक्षक | 25 | 8.3 |
| 13 | मानचित्रकार | 14 | 4.7 |
| 14 | कृषि विकास अधिकरी | 15 | 5.0 |
| 15 | सर्वेयर | 12 | 4.0 |
| | योग | 300 | 100 |

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययनगत उत्तरदाताओं में अधिकांश उत्तरदाता अर्थात 19 प्रतिशत सहायक ग्रेड 1 है। इसके बाद क्रमशः 11.3 प्रतिशत लेखापाल, 9.7 प्रतिशत उच्च श्रेणी शिक्षक, 8.7 प्रतिशत निम्न श्रेणी शिक्षक, 8.3 प्रतिशत अधीक्षक, 5.7 प्रतिशत सिपाही, 5.6 प्रतिशत वन क्षेत्रपाल, 5.3 प्रतिशत सहायक ग्रेड 2, 5.0 प्रतिशत कृषि विकास अधिकारी, 4.7 प्रतिशत मानचित्रकार, 4.0 प्रतिशत सर्वेयर, 3.7 प्रतिशत पटवारी, 3.3 प्रतिशत ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, 3.0 प्रतिशत खण्ड विस्तार प्रशिक्षक है। जबकि सबसे कम 2.7 प्रतिशत उत्तरदाता राजस्व निरीक्षक हैं।

**उत्तरदाताओं के सेवाकाल में पदस्थ कार्यालय का नाम :–**

छत्तीसगढ़ शासन के अंतर्गत जिन अध्ययनगत उत्तरदाताओं से जानकारी एवं तथ्य संकलित किए गये हैं, वे सेवाकाल में विभिन्न विभागों में पदस्थ थे। शोधार्थी द्वारा उत्तरदातओं के सेवाकाल में कार्यरत विभागों की जानकरी दी गई है। जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

**तालिका क्रमांक 4.9**

**उत्तरदाताओं के सेवाकाल में पदस्थ कार्यालय का नाम**

| क्रमांक | कार्यालय का नाम | आवृति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | शिक्षा विभाग | 40 | 13.3 |
| 2 | राजस्व | 29 | 9.7 |
| 3 | वन विभाग | 26 | 8.7 |
| 4 | पुलिस | 26 | 8.7 |
| 5 | तहसील | 28 | 9.3 |
| 6 | चिकित्सा | 25 | 8.3 |
| 7 | लोक निर्माण विभाग | 32 | 10.7 |
| 8 | जल संसाधन | 36 | 12.0 |
| 9 | कृषि विभाग | 15 | 5.0 |
| 10 | आदिमजाति कल्याण | 43 | 14.3 |
| | **योग** | **300** | **100** |

उपरोक्त आँकड़े से स्पष्ट है कि अध्ययनगत उत्तरदाता आदिमजाति कल्याण विभाग से 14.3 प्रतिशत लिये गये। इसी प्रकार 13.3 प्रतिशत शिक्षा विभाग से, 12.0 प्रतिशत जल संसाधन विभाग से, 10.7 प्रतिशत लोक निर्माण विभाग से, 9.3 प्रतिशत तहसील कार्यालय से, 9.7 प्रतिशत राजस्व विभाग से, 8.7 प्रतिशत वन विभाग से, 8.7 प्रतिशत पुलिस विभाग से, 8.3 प्रतिशत चिकित्सा विभाग से, एवं 5.0 प्रतिशत कृषि विभाग से लिये गये।

## उत्तरदाताओं का कितना वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त होनाः–

शासन की नीति एवं नियमानुसार एक निश्चित उम्र के पश्चात् सेवा से मुक्त(रिटायर्ड) कर दिया जाता हैं, क्योंकि व्यक्ति जीवन पर्यन्त एक ही क्षमता एवं कार्य कुशलता से कार्य नहीं कर पाता। दूसरी बात–नयी पीढ़ी को सेवा का अवसर देना हैं सेवानिवृत्तों से यह जानने का प्रयास किया गया हैं कि वे विगत कितने वर्षों से सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

### तालिका क्रमांक 4.10

### उत्तरदाताओं का कितना वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त होना

| क्रमांक | सेवानिवृत्त होने का वर्ष | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | पिछले 5 वर्षों से | 55 | 18.3 |
| 2 | 5–10 वर्षों से | 89 | 29.7 |
| 3 | 10–15 वर्षों से | 112 | 37.3 |
| 4 | 15 वर्षों से अधिक | 44 | 14.7 |
| | **योग** | **300** | **100** |

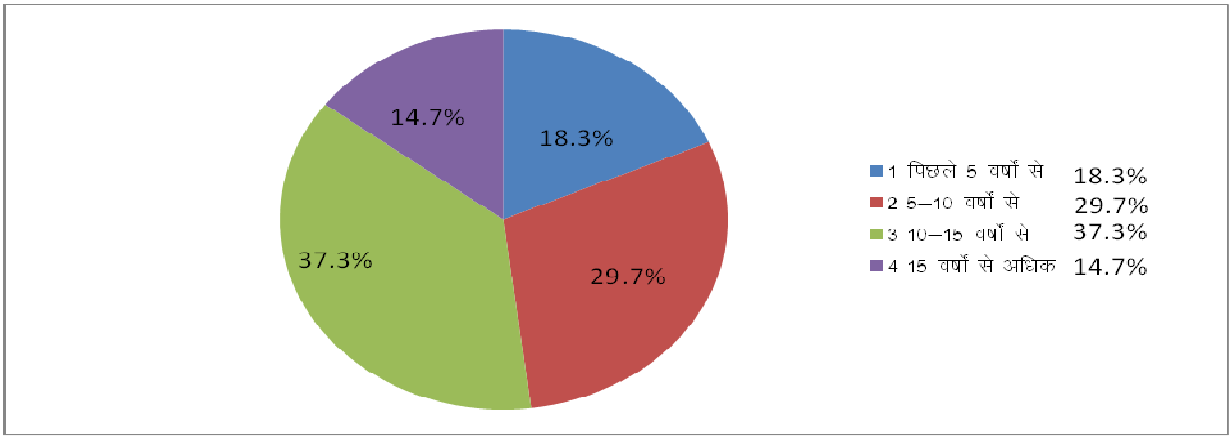


**आरेख क्रमांक 6**

सेवा निवृत्त उत्तरदाताओं के सेवा निवृत्ति होने के वर्ष के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सर्वाधिक 37.3 प्रतिशत उत्तरदाता पिछले 10–15 वर्षों से सेवा निवृत्त हुए है। वहीं 5–10 वर्ष से पूर्व सेवा निवृत्त होने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत

29.7 हैं। 18.3 प्रतिशत उत्तरदाता पिछले 5 वर्ष पूर्व तक सेवानिवृत्त हुए हैं। मात्र 14. 7 प्रतिशत उत्तरदाता पिछले 15 वर्षो पूर्व से अधिक समय से सेवानिवृत्त हुए हैं।

**उत्तरदाताओं का पताः–**

सामान्यतः पते से व्यक्ति की पहचान की जाती है। व्यक्ति का जन्म जिस स्थान पर होता है, वह उसका स्थायी निवास कहलाता है। इसी स्थायी निवास से ही वह अपनी शिक्षा प्रारंभ करता है। कभी–कभी शिक्षा के लिये स्थायी निवास से दूर अन्य शहर की ओर जाना पड़ता है। रोजगार के लिये स्थिति के अनुसार स्थायी निवास अथवा सेवास्थल में रहना पड़ता है। शोधार्थी द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि अध्ययनगत कितने उत्तरदाता अपने पूर्व स्थायी निवास में रहते हैं एवं कितने परिवर्तित स्थायी निवास में रहते हैं।

**तालिका क्रमांक 4.11**

**उत्तरदाताओं का पता**

| क्रमांक | निवास स्थान | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | स्थायी निवास | 133 | 44.3 |
| 2 | वर्तमान निवास | 167 | 55.7 |
| **योग** | | **300** | **100** |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से अधिक अर्थात् 55.7 प्रतिशत उत्तरदाता अपने पूर्व स्थायी निवास को छोड़कर रोजगार या शासकीय सेवा के कारण सेवारत स्थान को ही अपना स्थायी निवास बना लिया है और 44.3 प्रतिशत उत्तरदाता अपने जन्म स्थान को ही अपना स्थायी निवास बना लिया है।

**उत्तरदाताओं का पारिवारिक विवरण :–**

उत्तरदाताओं के सामान्य विवरण जानकारी ज्ञात करने के बाद उनका पारिवारिक विवरण ज्ञात करना अत्यंत आवश्यक है। परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है। मजूमदार (1968)[27] व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि उसके

व्यक्तित्व निमार्ण का आधार होती है। इसके माध्यम से ही उनके विचारों, मनोवृत्तियों एवं दृष्टिकोण को सही ढंग से समझा जा सकता है। परिवारिक पृष्ठभूमि मानवीय व्यवहार को महत्वपूर्ण तरीके से प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के परिवार का आकार, प्रकार, लिंग, आयु, शैक्षणिक–योग्यता, वैवाहिक–स्थिति, व्यवसाय एवं मासिक आय, इत्यादि तथ्यों को संकलित करके उत्तरदाताओं का पारिवारिक विवरण को ज्ञात करने का प्रयास किया शोधार्थी द्वारा किया गया है।

**परिवार के प्रकार :–**

भारत के विभिन्न समाजों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं परिस्थितियों आदि की विभिन्नताओं के कारण परिवार के कई स्वरूप देखने को मिलते हैं। इन परिवारों को (1) अधिकार के आधार पर (2) वंश के आधार पर (3) आवास के आधार पर (4) विवाह के आधार पर एवं (5) सदस्यों की संख्या के आधार पर विभाजित कर सकते हैं।

सत्ता के आधार पर परिवार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं :– (1) पितृसत्तात्मक (2) मातृ सत्तात्मक। अध्ययनगत समस्त उत्तरदाताओं के परिवार पितृसत्तात्मक परिवार है।वंश नाम के आधार पर परिवार दो प्रकार के होते हैंः– (1) पितृवंशीय (2) मातृवंशीय परिवार । अध्ययनगत समस्त उत्तरदाताओं के परिवार पितृवंशीय परिवार है।

अध्ययनगत उत्तरदाताओं के परिवार ''एक विवाही परिवार हैं। बहुविवाही, बहुपति या बहुपत्नी परिवार नहीं है।

अध्ययनगत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों के आधार पर परिवार के दो मुख्य स्वरूप देखने को मिला। (1) एकाकी परिवार (2) संयुक्त परिवार।

## तालिका क्रमांक 4.12

## परिवार का प्रकार

| क्रमांक | परिवार के प्रकार | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | संयुक्त परिवार | 93 | 31.0 |
| 2 | एकाकी परिवार | 207 | 69.0 |
| | योग | 300 | 100 |

उपरोक्त आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययनगत 69.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार एकाकी परिवार में रहते है एवं मात्र 31.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार संयुक्त परिवार है।

**परिवार का आकार :–**

सदस्य संख्या के आधार पर सामान्यतया परिवार के दो प्रकार हैं, लेकिन वर्तमान सामाजिक दृष्टिकोण से आकार के आधार पर परिवार को 3 वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। 1.लघु परिवार 2.मध्यम परिवार 3.वृहत परिवार।

## तालिका क्रमांक 4.13

## परिवार का आकार

| क्रमांक | परिवार का आकार | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | लघु परिवार (04 सदस्यों तक) | 103 | 34.3 |
| 2 | मध्यम परिवार (04–08 सदस्यों तक) | 171 | 57.0 |
| 3 | वृहत परिवार (08 से अधिक ) | 26 | 8.7 |
| | योग | 300 | 100 |

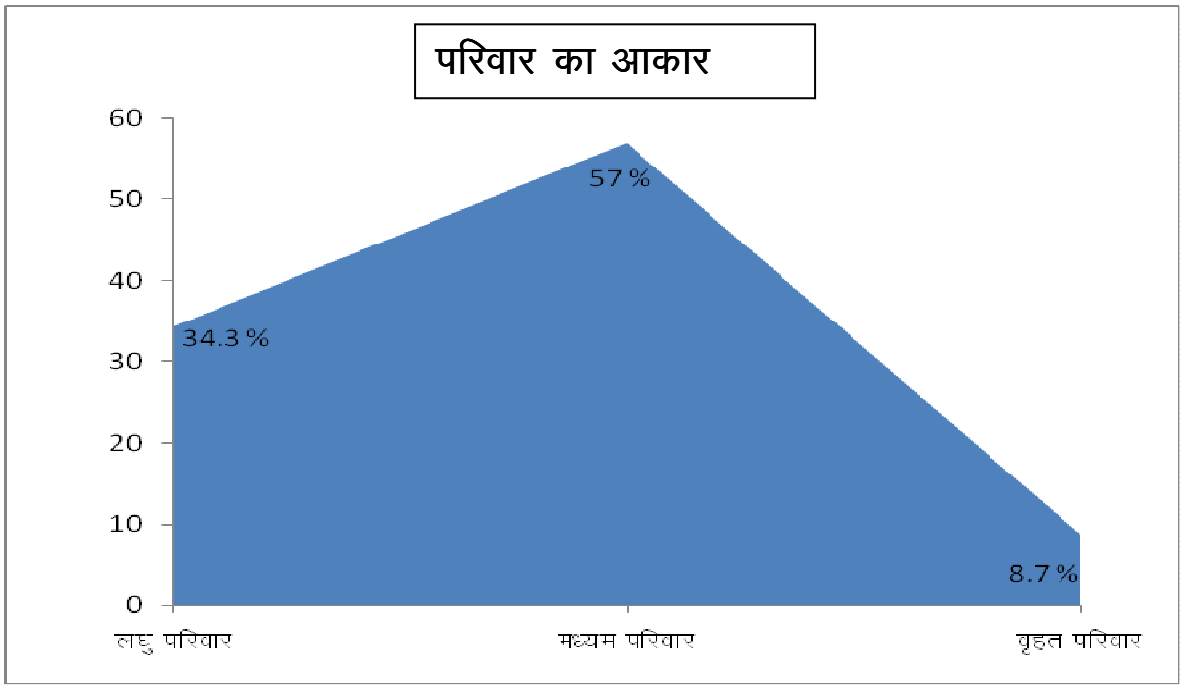


**आरेख क्रमांक 7**

उपरोक्त आँकडे के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 57.0 प्रतिशत परिवार 'मध्यम परिवार है''जिनके सदस्यों की संख्या 4 से 8 तक है 34.3 प्रतिशत परिवार लघु परिवार'' एवं सबसे कम मात्र 8.7 प्रतिशत वृहत परिवार हैं, जिनके सदस्यों की संख्या 8 से अधिक है। अतः वर्तमान में लघु एवं मध्यम आकार के परिवारों की संख्या में वृद्धि हो रही हैं।

**पारिवारिक सदस्यों का लिंग :–**

परिवार के सदस्यों में विभेदीकरण देखने को मिलता है। पुरूष वर्ग का कार्य क्षेत्र एवं महिला वर्ग का कार्य क्षेत्र अलग–अलग होता है। इसके बावजूद वर्तमान समय में महिला सदस्य कई क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कार्य कर अपनी योग्यता प्रदर्शित कर रहे हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधार्थी द्वारा परिवार के सदस्यों का लिंग जानने का प्रयास किया गया है। जिसे निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया हैं।

## तालिका क्रमांक 4.14

## पारिवारिक सदस्यों का लिंग

| क्रमांक | पारिवारिक सदस्यों का लिंग | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | पुरूष | 751 | 52.4 |
| 2 | महिला | 681 | 47.6 |
| | योग | 1432 | 100 |

इस आँकड़े से स्पष्ट होता है कि आधे से अधिक अर्थात 52.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्य पुरूष हैं एवं 47.6 प्रतिशत सदस्य महिलायें हैं।

**परिवारिक सदस्यों की आयुः–**

अध्ययनगत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों की आयु का उनके परिवार की आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। अधिक उम्र या बुजुर्गों की संख्या अधिक होने पर शारिरिक कमजोरी के कारण कुछ अर्थोपार्जन करने की स्थिति में नहीं रहते । वहीं युवा सदस्यों की संख्या अधिक होने पर परिवार की आय के स्त्रोत में वृद्धि भी हो सकती है। इन तथ्यों को आधार मानकर उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों की आयु जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

## तालिका क्रमांक 4.15

## पारिवारिक सदस्यों की आयु

| क्रमांक | आयु–समूह | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 10 वर्ष तक | 121 | 8.6 |
| 2 | 10 से 20 वर्ष | 108 | 7.5 |
| 3 | 20 से 30 वर्ष | 279 | 19.6 |
| 4 | 30 से 40 वर्ष | 326 | 22.8 |
| 5 | 40 से 50 वर्ष | 186 | 12.9 |
| 6 | 50 से 60 वर्ष | 112 | 7.8 |
| 7 | 60 से 70 वर्ष | 144 | 10.0 |
| 8 | 70 वर्ष से अधिक | 156 | 10.8 |
| | योग | 1432 | 100 |

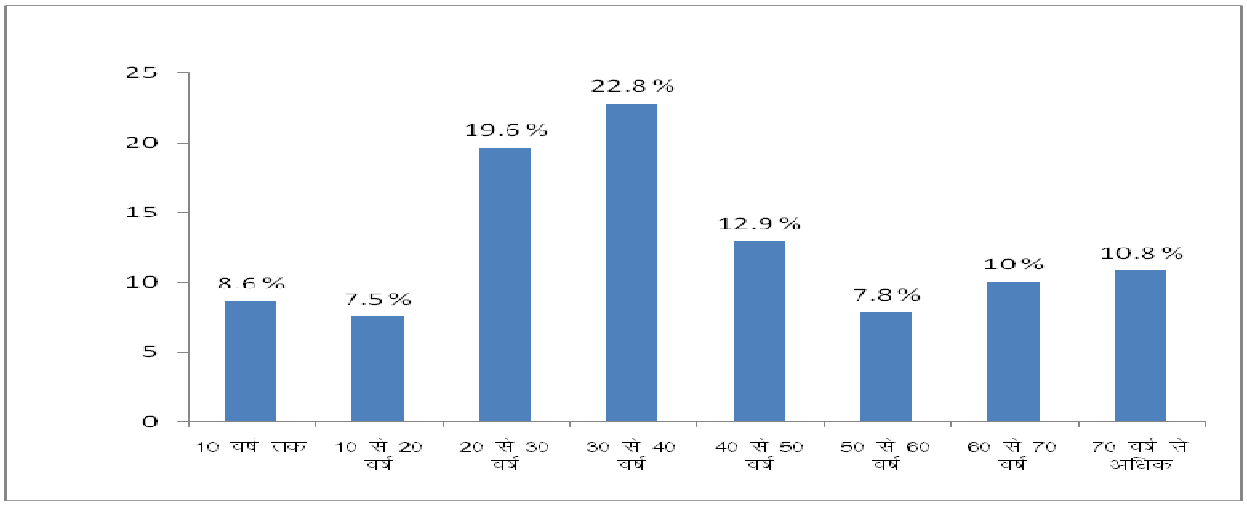


## आरेख क्रमांक 8

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययनगत उत्तरदाताओं के परिवार के अधिकांश सदस्यों अर्थात् 22.8 प्रतिशत सदस्य 30 से 40 वर्ष आयु समूह के हैं जबकि न्यूनतम 7.5 प्रतिशत सदस्य 10 से 20 वर्ष आयु समूह के है। 19.6 प्रतिशत सदस्य 20 से 30 वर्ष आयु समूह के, 12.9 प्रतिशत 40 से 50

वर्ष, 10.8 प्रतिशत सदस्य 70 वर्ष से अधिक उम्र के, 10 प्रतिशत 60 से 70 वर्ष आयु समूह के, 8.6 प्रतिशत सदस्य 10 वर्ष तक के एवं 7.8 प्रतिशत 50 से 60 वर्ष आयु समूह के हैं।

**परिवार के सदस्यों की शिक्षा :–**

''शिक्षा'' जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रकिया है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास करता है, सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराती है, वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग देती है, एवं भविष्य के प्रति आशावान बनाती है इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, जो मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों के विकास करने में सहायक होती हैं। विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से सामंजस्य करने में सहयोग देती है।'' इतना ही नही, शिक्षा व्यक्ति को जीवन एवं नागरिकता के कर्तव्यों एवं दायित्वों को पूर्ण करने के लिए मार्गदर्शन देती है, तथा व्यक्ति को ऐसा विवेकवान बनाती है, कि वह अपने समाज, राष्ट्र, विश्व, एवं संपूर्ण मानवता के कल्याण एवं हितार्थ, चिन्तन, मनन संकल्प, एवं कार्य कर सके।

शिक्षा युवा पीढ़ी का समाजीकरण प्रक्रिया का आधारभूत कारक है । अतः किसी समाज या समुदाय की आधार शिला शिक्षा को कह सकते है। भूतकाल की अपेक्षा वर्तमान समय में व्यावसायिक शिक्षा का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। यह व्यावसायिक शिक्षा सामाजिक गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक स्तर के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। वर्ममान समय में जहां विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से औपचारिक शिक्षा दी जा रही हैं, वहीं समाज तथा परिवार से अनौपचारिक शिक्षा का भी महत्व है। ''शिक्षा'' के द्वारा व्यक्ति शिक्षित होकर अपनी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करता है अर्थात समाज की अज्ञानता दूर होती है। साथ ही विभिन्न संस्कृतियों एवं रूचियों के लोगों में समझ का विकास तथा उनमें व्याप्त भ्रम दूर होता है।

शिक्षा मानव जीवन में परिवर्तन लाती है साथ ही प्रायः प्रत्येक क्षेत्र जैसेः– समाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन शिक्षा द्वारा होता है।

किसी समाज में शिक्षा का जितना अधिक प्रचार–प्रसार होता है उस समाज में उतना अधिक परिवर्तन होता है क्योंकि शिक्षा बौद्धिक विकास करके प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा के द्वारा ही नियोजित सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है। अतः शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है।

शिक्षा एक निरंतर चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है। यह समय, समाज, एवं परिस्थिति के अनुकूल विभिन्न कार्यो को करके सामाजिक नियंत्रण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। व्यवसायिक शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, प्रशासनिक शिक्षा, लोक कल्याण की शिक्षा, विधि– विधान की शिक्षा आदि के द्वारा भी व्यक्ति को समाज के अनुकूल बनाने का कार्य शिक्षा करती है।

समाज या राष्ट्र जब अनियंत्रित होने लगता है, तो इसको नियंत्रित करने के लिए आवश्यकता होती है– एक अच्छी शिक्षा कीं। शिक्षा के माध्यम से ही समाज में भावनात्मक एकता, एवं राष्ट्रीय एकता को जागृत तथा विकसित कर सकते है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के हृदय में राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति और व्यक्ति के प्रति स्नेह, प्रेम, एवं सौहार्द्र की भावना का विकास होता है, जिससे भावनात्मक एकता उत्पन्न होती है। समाज में लोग संकीर्ण विचारो से ऊपर उठकर समाज में संगठन एवं अनुशासन को बनाये रखने का प्रयत्न करते है। दूसरे शब्दो में अनुशासित रहने की भावना का विकास होता है।

सामाजिक मूल्यों को प्राप्त करने वाली प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हुए सेमुअल (1957)[28] कहते है– शिक्षा समुदाय या समुदाय के व्यक्तियों के द्वारा निर्देर्शित एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जो समाज द्वारा मान्य मूल्यों को प्राप्त करना चाहती है।

शिक्षा समाज में दृढ़ता बनाये रखने एवं मूल्य व्यवस्था में एकमत कायम करने का कार्य करती है। शिक्षा समाज के आदर्श– नियमों एवं मूल्यों को पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है। यह व्यक्तियों को सामूहिक जीवन से जोड़ती है। सामूहिकता के अभाव में समाज–व्यवस्था का बना रहना असंभव है। स्कूल को समाजीकरण की केन्द्रिय ऐजेंसी मानते है, जो परिवार एवं समाज के बीच कड़ी का कार्य करती है।

## तालिका कमांक 4.16

## पारिवारिक सदस्यों की शिक्षा

| कमांक | शिक्षा | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अशिक्षित | 174 | 12.5 |
| 2 | पूर्व माध्यमिक | 256 | 17.8 |
| 3 | उच्च माध्यमिक | 315 | 21.9 |
| 4 | स्नातक | 415 | 28.9 |
| 5 | स्नातकोत्तर | 143 | 9.9 |
| 6 | व्यावसायिक | 129 | 9.0 |
| **योग** | | **1432** | **100** |

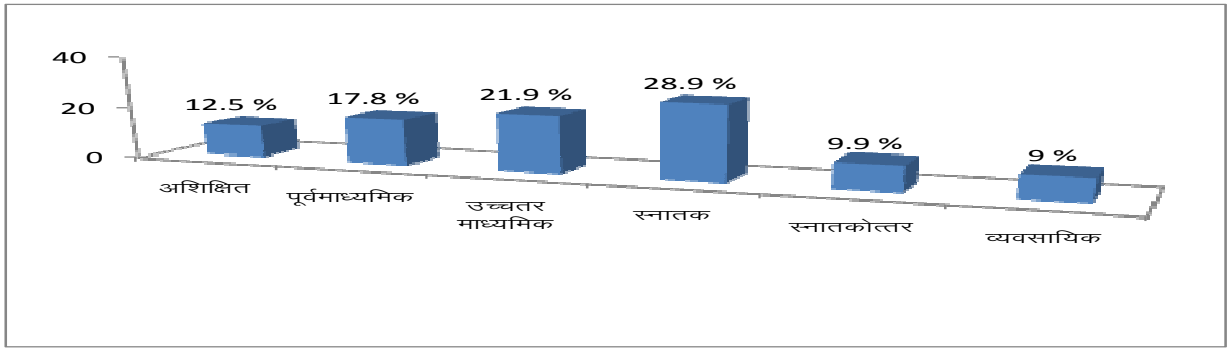


**आरेख क्रमांक 9**

अध्ययनगत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों की शिक्षा की जानकारी लेने पर पता चला कि सर्वाधिक 28.9 प्रतिशत सदस्य स्नातक तक शिक्षा प्राप्त किये हैं। 21.9 प्रतिशत सदस्य उच्चतर माध्यमिक, 17.8 प्रतिशत पूर्व माध्यमिक, 12.5

प्रतिशत अशिक्षित एवं 9.9 प्रतिशत स्नातकोत्तर, तक शिक्षा प्राप्त किए हैं। मात्र 9.0 प्रतिशत सदस्य व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त किए हैं।

*परिवार के सदस्यों की वैवाहिक स्थिति :–*

धार्मिक क्रियाओं पर आधारित विवाह एक ऐसी धार्मिक संस्था है, जो परिवार में रहने वाले समस्त सदस्यों की देखभाल एवं पालन पोषण सही तरीके से करती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि विवाह नामक संस्था परिवार की आधारशिला है। विवाह से ही परिवार की सृष्टि होती है, जो व्यक्ति को कर्तब्य बोध भी कराती है। अतः उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों की वैवाहिक स्थिति जानने का प्रयास किया गया।

**तालिका कमांक –4.17**

**पारिवारिक सदस्यों की वैवाहिक स्थिति**

| क्रमांक | वैवाहिक स्थिति | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अविवाहित | 254 | 17.7 |
| 2 | विवाहित | 1110 | 77.6 |
| 3 | विधवा | 28 | 1.9 |
| 4 | विधुर | 40 | 2.8 |
| | **योग** | **1432** | **100** |

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विवाहित पारिवारिक सदस्यों का प्रतिशत 77.6 है। 17.7 प्रतिशत सदस्य अविवाहित, 2.8 प्रतिशत विधुर एवं सबसे कम विधवा उत्तरदाताओं का प्रतिशत 1.9 है।

*परिवार के सदस्यों की व्यवसायिक स्थिति :–*

वर्तमान भौतिकवादी युग एवं तीव्र औद्योगिकीकरण के कारण परिवार के सदस्यों की व्यवसायिक प्रवृत्ति में वृध्दि हुई है। छत्तीसगढ़ जैसे विकासशील एवं नवोदित राज्य में कृषि के बजाए अन्य उद्योग धन्धे की ओर आकर्षित हुए है। इन

व्यवसायिक सदस्यों का मुख्य उददे्श्य अपनी शिक्षा का अधिकतम उपयोग कर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ करना है। व्यवसायिक प्रवृत्ति में वृध्दि का पता लगाने हेतु सदस्यों की व्यवसायिक स्थिति का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि, अधिकांश सदस्य अशासकीय संस्था एवं निजी उद्योग धंधे में कार्यरत हैं जो कि, निम्न तालिका से स्पष्ट है।

## तालिका क्रमांक –4.18

## पारिवारिक सदस्यों का व्यवसाय

| क्रमांक | व्यवसाय | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | शासकीय | 409 | 28.6 |
| 2 | अशासकीय, निजी | 647 | 45.1 |
| 3 | कार्य न करने वाले | 168 | 11.7 |
| 4 | स्वतंत्र | 208 | 14.6 |
| | **योग** | **1432** | **100** |

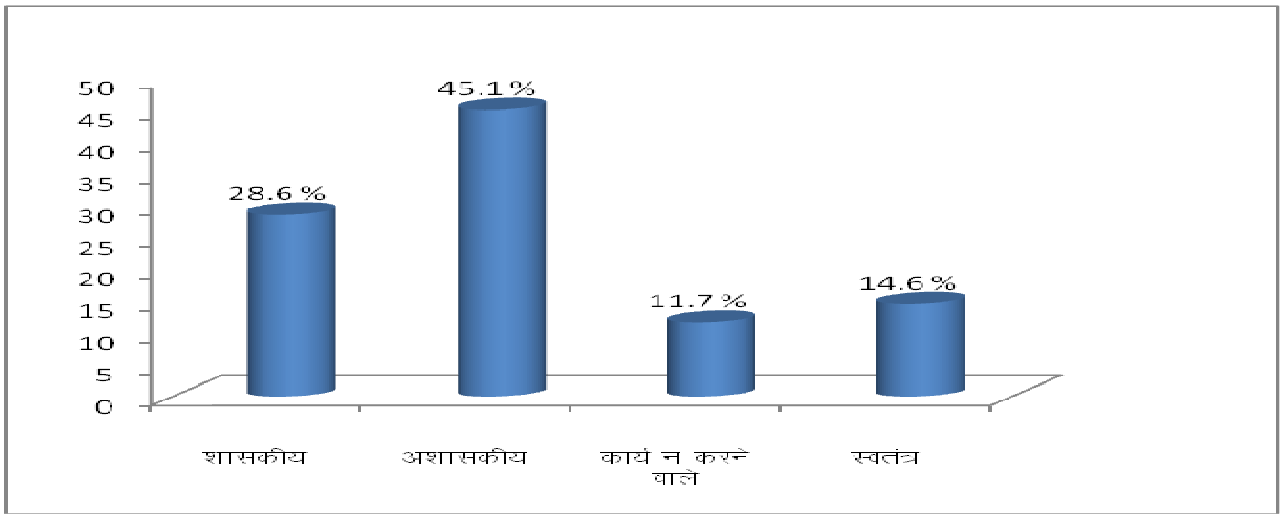


**आरेख क्रमांक 10**

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 45.1 प्रतिशत सदस्य अशासकीय सेवा में कार्यरत् है। 28.6 प्रतिशत सदस्य शासकीय सेवा में कार्यरत हैं, वहीं 14.6 प्रतिशत सदस्य स्वतंत्र व्यवसाय से संबद्ध है। मात्र 11.7 प्रतिशत सदस्य कार्य न करने वाले हैं।

*परिवार की आय :–*

व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसकी आय से प्रभावित होती है, एवं व्यक्तिगत जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। परिवार के प्रत्येक सदस्यों की आय भिन्न–भिन्न होती है, और यही विभिन्नता इनकी भौतिकवादी सोच को विकसित करती है। परिणाम स्वरूप भावनात्मक दूरियाँ बढ़ने के साथ–साथ उनकी महत्वकांक्षाएं बढ़ती है। परिवार की आय को चार भागों में विभाजित किया गया है। 1. 10,000 रूपये तक, 2. 10,001 से 20,000 रूपये तक, 3. 20,001 से 30,000 रूपये तक, 4. 30,000 रूपये से अधिक।

अध्ययनगत समूह के उत्तरदाताओं से उनके परिवार की आय को ज्ञात किया गया है जिसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

**तालिका क्रमांक–4.19**

**उत्तरदाताओ के परिवार की आय**

| **क्रमांक** | **आय (मासिक)** | **आवृत्ति** | **प्रतिशत** |
|---|---|---|---|
| 1 | 10,000 रू. तक | 31 | 10.3 |
| 2 | 10,001 से 20,000 रू. तक | 53 | 17.6 |
| 3 | 20,001 से 30,000 रू. तक | 142 | 47.3 |
| 4 | 30,000 से अधिक | 74 | 28.4 |
| | **योग** | **300** | **100** |

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण यह स्पष्ट होता है कि, सर्वाधिक 47.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की आय 20,001 से 30,000 रू. तक है। 28.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 30,000 से अधिक है। 17.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 10,001 से 20,000 रू. तक एवं मात्र 10.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 10,000 रू. तक हैं।

# Reference


1. Durkhiem, E; Le Suicide, Pessien Peris, 1912, P. 89
2. Sorokin, P.A; Social and cultural mobility, The free press, Glanco, 1927, P. 27
3. Anderson, C.A; A Skeptical note on the relation at vertical mobility to education , American journal of sociological Research LX vi 1961
4. Srinivas, M.N;- Social change in modern India, Berkley and Los Angeles University of California Press, 1966.
5. Bierstedt, Robert; The Social Order, Mac Gra Hill Book Co. New York, 1957 P. 137
6. Davis, K;- Human Society, Mac Millan, New York, 1948, P. 197
7. Bogardus, E.S;- Sociology, Mac Millan, New York, 1926, P. 233
8. Green, Arnold, W;- Sociology, An Analysis of Life In Modern Society, Mac Gra Hill Book Co., Newyork,1956, P. 127
9. Young, Kimbal;- A Hand Book Of Social Psychology Cropts, New York, 1956, P. 19
10. Mukharjee, RK., "Social Structure of values", Saraswati Prakashan Meerut, 1973 PP. 46.
11. Burgess Locke And Thomos, - The Family, 4th Edition, Van Nastrand Rein Hold Co. New York, 1971, P. 7
12 . MacIver, & page- Society, Macmillan N. Delhi 1977, PP. 127
13. Reverse, W.H.R; Social Organization, Prentice Hall, New York, 1950, P. 10
14. Burgess Locke And Thomos, - The Family, 4th Edition, Van Nastrand Rein Hold Co. New York, 1971, P. 7
15. Murdock,G.P;- Comperative Study On Division Of Labour By Sex, Social Forces, Vol. 15, 1937, P. 551-553
16. इन्द्रदेव, भारतीय समाज, Rawat Pub. Agra, 1989, PP- 58.

17. Majumdar, D.N. Races and culture in India, Asia Publishing House, Bombay, 1968, PP- 95.

18. शर्मा डी.एन.– भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, 1983, पृ. 48

19. Taylor, E.B., Primitive Culture, Harper & Brother, N.Y. 1911, PP- 35.

20. Davis, Kingsley, Human Society Kitab Mahal Allahabad, 1981,PP-78. PP 212

21. Durkhiem- Quoted from Bottomore, T.B., " Sociology" George Allen & Unvin Ltd., 1975 PP- 36.

22. Rad Cliffe Brown, A.R; - Introduction In African System Of Kinship And Marriage Oxford University Press, 1950, P. 358

23. Kapadia, K.M;- Marriage And Family In India, Oxford University press, 1966, P.329

24. Wester Mark;- The History Of Human Marriage Algin & Co., 1959, Vol. 1, P. 26

25. Majumdar & madan;- An Introduction to Anthropology, GM Publications New Delhi, 1961,P. 79

26. Murdock;- Social Structure, Kelwin Brothers, London, 1942,P.261

27. **मजूमदार, डी. एन.,** Races and culture in India, Asia Publishing House, Bombay, 1968, PP- 95.

28. Eby, L. Samuel- An Introduction to Western Civilization , Oxford University Press, 1957, P. 659